मेरा हाल सोडियम-सा है

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-२०१२, मूल्य-४० रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, **ईसानगर**
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय

रमेशराज

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊधौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

मेरा हाल सोडियम-सा है
(लम्बी तेवरी-तेवर-शतक)

रमेशराज

इस निजाम ने जन कूटा है
कौन यहाँ पर बचा लेखनी। १

गर्दन भले रखा आरा है
सच बोलूंगा सदा लेखनी। २

मैंने हँस-हँस जहर पिया है
मैं 'मीरा-सा' रहा लेखनी। ३

मेरा स्वर कुछ बुझा-बुझा है
मैं मुफलिस की सदा लेखनी। ४

मेरे हिस्से में पिंजरा है
तड़पे मन का 'सुआ' लेखनी। ५

मेरा 'पर' जब-जब बाँधा है
आसमान को तका लेखनी। ६

मन के भीतर घाव हुआ है
मैं अब दुःख से भरा लेखनी। ७

आदमखोरों से लड़ना है
तुझको चाकू बना लेखनी। ८

शब्द-शब्द आग जैसा है
कविता में जो रखा लेखनी। ९

छल सरपंच बना बैठा है
इस पै अँगुली उठा लेखनी। १०

जो सोया भूखा-प्यासा है
उसको रोटी जुटा लेखनी। ११

मन अब अंगारे जैसा है
तू दे थोड़ी हवा लेखनी। १२

इसका दम्भ तोड़ देना है
ये है खूनी किला लेखनी। १३

तुझसे जनमों का नाता है
तू मेरी चिरसखा लेखनी। १४

मुझको क्रान्ति-गीत गाना है
मैं शायर सिरफिरा लेखनी। १५

मुझमें क्रान्ति-भरा किस्सा है
मुझको आगे बढ़ा लेखनी। १६

मुझ में डाइनामाइट-सा है
इक दिन दूंगा दिखा लेखनी। १७

सच हर युग ऐसा धागा है
जिसने हर दुःख सिया लेखनी। १८

कुम्भकरण जैसा सोया है
सच को अब तो जगा लेखनी। १९

मुझ में जोश तोप जैसा है
तू जुल्मी को उड़ा लेखनी। २०

'सोच' आग-सा धधक रहा है
मन कंचन-सा तपा लेखनी। २१

ये ख़याल मन उभर रहा है
मैं रोटी, तू तवा लेखनी। २२

जिबह कबूतर अब सुख का है
पंखों को फड़फड़ा लेखनी। २३

सिसके निश-दिन मानवता है
शेष न अब कहकहा लेखनी। २४

हर कोई अब कायर-सा है
बार-बार ये लगा लेखनी। २५

यहाँ बोलबाला छल का है
सबने सबको ठगा लेखनी। २६

खामोशी से कब टूटा है
शोषण का सिलसिला लेखनी। २७

खल पल-पल कर जुल्म रहा है
इसके चाँटे जमा लेखनी। २८

घर के आगे 'क्रान्ति' लिखा है
मेरा इतना पता लेखनी। २९

जिन पाँवों में कम्पन-सा है
बल दे, कर दे खड़ा लेखनी। ३०

'झिंगुरी' को गाली देता है
अब जो 'होरी' मिला लेखनी। ३१

मैंने 'गोबर' को देखा है
नक्सलवादी हुआ लेखनी। ३२

'धनिया' ने 'दाता' पीटा है
अब आया है मजा लेखनी। ३३

खूनी उत्सव रोज हुआ है
ये कैसी है प्रथा लेखनी। ३४

घुलता साँसों में विष-सा है
कैसी है ये हवा लेखनी। ३५

महज पतन की अब चर्चा है
सामाजिक-दुर्दशा लेखनी। ३६

जन चिल्ला-चिल्ला हारा है
बहरों की है सभा लेखनी। ३७

अपने को नेता कहता है
जो साजिश में लगा लेखनी। ३८

वही आज संसद पहुँचा है,
जो गुण्डों सँग रहा लेखनी। ३९

सुख तो एक अदद लगता है
दर्द हुआ सौ गुना लेखनी। ४०

धर्मराज अब भी खेला है
आदर्शों का जुआ लेखनी। ४१

जो मक्कार और झूठा है
वो ही हर युग पुजा लेखनी। ४२

राजा रसगुल्ले खाता है
भूखी है पर प्रजा लेखनी। ४३

जज़्बातों से वो खेला है
सबका बनकर सगा लेखनी। ४४

सुन वसंत तब ही आया है
पात-पात जब गिरा लेखनी। ४५

मुझमें 'कुछ' ऐसे तनता है
मैं फोड़े-सा पका लेखनी। ४६

कैसे कह दूँ अंगारा है
जो भीतर तक बुझा लेखनी। ४७

मेरा हाल 'सोडियम'-सा है
मैं पानी में जला लेखनी। ४८

भले आज तम का जल्वा है
लेकिन ये कब टिका लेखनी। ४९

कैसा नाटक रचा हुआ है
लोग रहे सच छुपा लेखनी। ५०

उसका अभिनंदन करना है
जो अपने बल उठा लेखनी। ५१

जन के लिये न्याय बहरा है
चीख-चीख कर बता लेखनी। ५२

जिनको भी अपना समझा है
वे करते सब दगा लेखनी। ५३

अनाचार से अब लड़ना है
फड़क रही हैं भुजा लेखनी। ५४

अंधकार कुछ तो टूटा है
बार-बार ये लगा लेखनी। ५५

तू चलती, लगता चलता है
साँसों का सिलसिला लेखनी। ५६

जीवन-भर संघर्ष किया है
मैं दर्दों में जिया लेखनी। ५७

और नहीं जग में तुझ-सा है
जो दे उत्तर सुझा लेखनी। ५८

कैसे सत्य कहा जाता है
सीख तुझी से लिया लेखनी। ५९

उन हाथों में अब छाला है
कल थी जिन पै हिना लेखनी। ६०

चक्रब्यूह ये प्रश्नों का है
अभिमन्यु मैं, घिरा लेखनी। ६१

आकर मन जो दर्द बसा है
कब टाले से टला लेखनी। ६२

मन तहखानों में पहुँचा है
जब भी सीढ़ी चढ़ा लेखनी। ६३

टुकड़े-टुकड़े महज रखा है
नेता ने सच सदा लेखनी। ६४

छल स्वागत में खड़ा मिला है
जिस-जिस द्वारे गया लेखनी। ६५

जिसमें प्रभा-भरा जज़्बा है
हर दीपक अब बुझा लेखनी। ६६

जिसको सच का नभ छूना है
पाकर खुश है गुफा लेखनी। ६७

'बादल देगा जल' चर्चा है
मौसम फिर नम हुआ लेखनी। ६८

पग मेरा अंगद जैसा है
अड़ा जहाँ, कब डिगा लेखनी। ६९

प्रस्तुत उनको ही करना है
जिन शब्दों में प्रभा लेखनी। ७०

मुंसिफ के हाथों देखा है
अदालतों में छुरा लेखनी। ७१

शान्तिदूत खुद को कहता है
हमें खून वो नहा लेखनी। ७२

सबको पंगु बना बैठा है
अब पश्चिम का नशा लेखनी। ७३

न्याय-हेतु थाने जाना है
जो चोरों का सगा लेखनी। ७४

अनाचार अब बन बैठा है
ईमानों का सखा लेखनी। ७५

सच जब भी शूली लटका है
'भगत सिंह'-सा हँसा लेखनी। ७६

मल्टीनेशन जाल बिछा है
जन कपोत-सा फँसा लेखनी। ७७

घर-घर में पूजा जाता है
अब बिनलौनी-मठा लेखनी। ७८

नयी सभ्यता का पिंजरा है
इसमें खुश हर सुआ लेखनी। ७९

जिसमें दम सबका घुटता है
अब भायी वह हवा लेखनी। ८०

मृग जैसा मन भटक रहा है
ये पश्चिम की तृषा लेखनी। ८१

पल्लू थाम गाँव पहुँचा है
महानगर का नशा लेखनी। ८२

जिधर झूठ का बोझ रखा है
उधर झुकी है तुला लेखनी। ८३

आज आस्था पर हमला है
मूल्य धर्म का गिरा लेखनी। ८४

देव-देव सहमा-सहमा है
असुर लूटते मजा लेखनी। ८५

अब रामों सँग सूपनखा है
त्यागी इनने सिया लेखनी। ८६

आज कायरों कर गीता है
अजब देश में हवा लेखनी। ८७

चीरहरण खुद कर डाला है
द्रौपदि अब बेहया लेखनी। ८८

मनमोहन गद्दी बैठा है
किन्तु कंस-सा लगा लेखनी। ८९

जहाँ नाचती मर्यादा है
डिस्को का क्लब खुला लेखनी। ९०

सबको लूट बना दाता है
जो मंचों पर दिखा लेखनी। ९१

मानव जब मति से अंधा है
क्या कर लेगा दीया लेखनी। ९२

हमने बगुलों को पूजा है
हंस उपेक्षित हुआ लेखनी। ९३

छल का रूप साधु जैसा है
तिलक! चीमटा! जटा! लेखनी। ९४

वह जो वैरागी दिखता है
माया की लालसा लेखनी। ९५

नदी निकट बगुला बैठा है
रूप भगत का बना लेखनी। ९६

जनहित में तेवर बदला है
चीख नहीं है वृथा लेखनी। ९७

हर तेवर आक्रोश-भरा है
यह सिस्टम नित खला लेखनी। ९८

इन तेवरियों में मिलता है
असंतोष का पता लेखनी। ९९

तेवर-तेवर अब तीखा है
जन-जन की है व्यथा लेखनी। १००

मन 'विरोध' से भरा हुआ है
खल के प्रति अति घृणा लेखनी। १०१

पूछ न आज तेवरी क्या है
बनी अग्नि की ऋचा लेखनी। १०२

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,
निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़